पाठ 12

हॉकी का जादूगर : ध्यानचंद

बच्चो आपको हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट जैसे खेलों में रुचि जरूर होगी और आप में से बहुत सारे बच्चे इन खेलों को खेलते भी होंगे। हॉकी हमारे देश का प्रमुख खेल है, और इस खेल में श्रेष्ठता हासिल करने वाले भारतीय खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद का नाम आपने अवश्य ही सुना होगा।

हॉकी के इस महान खिलाड़ी का जन्म 22 अगस्त सन् 1905 को इलाहबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके जन्म के कुछ समय के बाद इनका परिवार झाँसी में बस गया। पिता सोमेश्वर सिंह सेना में सूबेदार थे। ध्यानचंद जी को बचपन से ही हॉकी के खेल में रुचि थी, उनका खेलने का तरीका अत्यंत आकर्षक व रोमांचकारी था। खेल देखने वालों की नज़रें मैदान से क्षणभर को भी नहीं हटती थीं।

उनके खेलने की गति जादू की तरह थी। जब खेलते थे तो वे जिधर चाहते थे, गेंद उधर ही जाती थी। जब मिलिट्री (सेना) की टीमें आपस में हॉकी खेलती थीं तो खेल मैदान का सारा प्रबंध उनके पिता को ही करना पड़ता था। वे पिताजी से मिलने के बहाने दोनों टीमों का खेल देखने जाया करते थे। विद्यालय में हॉकी और गेंद लिए अभ्यास कर खेल के नियमों को समझा करते थे।

एक बार जब ध्यानचंद मिलिट्री टीमों का मैच देखने गए तब दोनों टीमें मैच के लिए तैयार थीं किन्तु किसी कारण एक टीम का गोलकीपर नहीं आ पाया था। मैच निर्धारित समय पर आरम्भ करना था। उन्होंने पिताजी से कहा–"आप कप्तान साहब से आज्ञा दिला दें तो मैं गोलेकीपर के स्थान पर खड़ा हो जाऊँ।" पिताजी जानते थे कि ध्यानचंद सुबह–शाम हॉकी का अभ्यास करते हैं और कोई रास्ता न देख उन्होंने कप्तान साहब से अनुमति प्राप्त कर ली और मैच शुरू हो गया।

खेल का काफी समय गुजर जाने पर भी कोई टीम गोल नहीं कर पाई। जब मध्यान्तर हुआ और दोनों टीमें मैदान से बाहर पानी पीनें के लिए आईं तब ध्यानचंद ने पिताजी से कहा–"अगर कोई गेंद मेरे गोल में आए तो क्या उसे रोककर मैं गोल करने जा सकता हूँ।" इस पर पिताजी ने उनसे कहा–"यह साहब लोगों का

शिक्षण संकेत

- शिक्षक यह पढ़ाने के पूर्व हॉकी के जादूगर ध्यानचंद जी के बारे में संक्षेप में बताएँ। • छात्र जीवन में विभिन्न खेलों की महत्ता पर प्रकाश डालें। • बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार खेलने के लिए प्रेरित करें। • खेल–कूद से होने वाले लाभों तथा परिवेश में खेले जाने वाले खेलों पर चर्चा करें।

खेल है, तुम्हें ऐसा कुछ भी नहीं करना है।'' यह बातें उनकी टीम के कप्तान ने सुन लीं, उन्होंने कहा ''हम इतने बड़े व अनुभवी होकर गोल नहीं कर सके तो यह बच्चा क्या करेगा?'' कप्तान ने ध्यानचंद से कहा– ''यदि तुम्हारे पास गेंद आए तो तुम गोल कर आना''। मध्यान्तर के पश्चात् खेल पुनः आरम्भ हो गया। कुछ समय के बाद गेंद जब उनके गोले में आई, उन्होंने गेंद को रोका और दूसरी ओर गोल करने दौड़े व गोल कर दिया। कप्तान ने आकर उन्हें शाबासी दी और कहा–''क्या तुम इसी तरह और भी गोल कर सकते हो?'' उन्होंने कहा–''कोशिश करूँगा। खेल समाप्त होने के कुछ समय पहले गेंद फिर उनके गोल में आई उन्होंने गेंद को रोका और फिर गोल करने के लिए आगे बढ़ गए और दूसरा गोल कर दिया।''

कप्तान ने उन्हें गोद में उठा लिया और दोनों टीमों के मध्य ले जाकर बोले–''इस बच्चे ने दोनों गोल चुनौती के रूप में किए हैं, जब बचपन में यह इतना अच्छा खेलता है तो बड़ा होकर जरूर यह हॉकी का प्रसिद्ध खिलाड़ी बनेगा।''

खेल की यह चर्चा जब ब्रिगेडियर तक पहुँची तो उन्होंने ध्यानचंद को आर्मी में भर्ती करने के निर्देश दिए।

सन् 1928 में पहली बार हिन्दुस्तान टीम एमस्टर्डम की ओलम्पिक प्रतियोगिता में शामिल हुई, ध्यानचंद जी का खेल देखकर लोग अचम्भित रह गए। भारतीय टीम ने पाँच मैच खेले और पाँचों में विजयश्री हासिल की।

सन् 1932 और 1936 में जब जर्मनी के बर्लिन शहर में ओलम्पिक हुए तो मेजर ध्यानचंद के नेतृत्व में दोनों ओलम्पिक खेलों में भी भारतीय टीम विजयी रही। बर्लिन-ओलम्पिक में हिन्दुस्तानी टीम के प्रदर्शन पर लोग कहने लगे कि ध्यानचंद की हॉकी में जादू है। फायनल मैच, जो कि जर्मनी और भारत के बीच हुआ था उसमें उन्होंने मध्यान्तर तक अकेले ही चार गोल कर दिए। तब हिटलर स्वयं मैदान में आए और ध्यानचंद की पीठ थपथपाकर हाथ मिलाते हुए उन्हें ''हॉकी का जादूगर'' कहा।

भारत सरकार ने भी उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। सेना में रहते हुए वह मेजर के पद तक पहुँचे।

बच्चो तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस प्रकार अपने देश के किसी भी शासकीय कार्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का चित्र लगा होता है। उसी तरह देश-विदेशों के खेलकूद संबंधी कार्यालयों में स्वर्गीय ध्यानचंद जी का फोटो लगा रहता है। उनके भाई रूप सिंह भी हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी थे।

ध्यानचंद जी बड़ी लगन और मेहनत से निष्ठापूर्वक हॉकी खेलकर सफलता के शिखर पर पहुँचे और हॉकी का विश्वप्रसिद्ध खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त किया। हमें इनके जीवन से प्रेरणा लेकर निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ना चाहिए।

▸ प्रेमशंकर शुक्ल

(लेखक-वरिष्ठ हॉकी प्रशिक्षक एवं भारतीय खेल प्राधिकरण में पदस्थ हैं।)

नए शब्द

रुचि = इच्छा, पसंद। **ड्यूटी** = कर्तव्य। **प्रबन्ध** = व्यवस्था। **अभ्यास** = प्रयास, प्रयत्न। **सुनहरा अवसर** = अच्छा मौका। **गोलकीपर**=गोल बचाने वाला। **ब्रिगेडियर**=थल सेना के अधिकारी का पदनाम। **आर्मी** = थल सेना। **मेजर** = सेना में एक पद (रैंक)। **ओलम्पिक** = प्रत्येक चौथे वर्ष में होने वाला अन्तर्राष्ट्रीय खेल समारोह।

अनुभव विस्तार

1. आलेख से खोजकर बताइए-

(ख) जोड़ी बनाइए-

हॉकी का जादूगर	–	सोमेश्वर सिंह
आर्मी	–	अंतर्राष्ट्रीय खेल
ओलम्पिक	–	ध्यानचंद
सेना में सूबेदार	–	मेजर

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. दोनों टीमें आपस में मैंच.....रही थी।
2. ध्यानचंद को बचपन से ही हॉकी के खेल में .....थी।
3. भारतीय टीम ने पाँच मैंच खेले और पाँचों में .....रहीं।
4. कप्तान ने कहा-''यदि तुम्हारे पास गेंद आए तो तुम..... कर आना।''

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए-

1. आप व्यायाम के लिए कौन-कौन से खेल खेलते हैं?
2. ध्यानचंद का परिवार कहाँ आकर बस गया था?
3. भारत और जर्मनी के बीच हुए फाइनल मैच में ध्यानचंद ने कितने गोल किए?
4. भारत सरकार ने ध्यानचंद को कौन-सा पुरस्कार दिया था?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. ध्यानचंद प्रतिदिन शाम को पिताजी से मिलने क्यों जाते थे?
2. हिटलर ने हॉकी का जादूगर किसे और क्यों कहा?
3. ध्यानचंद के जीवन में सुनहरा अवसर कब व कैसे आया?
4. ध्यानचंद सफलता के शिखर पर कैसे पहुँचे?

भाषा की बात

पिताजी जानते थे कि ध्यानचंद सुबह-शाम हॉकी का अभ्यास करते हैं और कोई रास्ता न देख उन्होंने कप्तान साहब से अनुमति प्राप्त कर ली और मैच शुरू हो गया। मैच खत्म होने तक ध्यानचंद ने दो गोल कर दिए।

x x x

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस प्रकार अपने देश के किसी भी शासकीय कार्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का चित्र लगा होता है। उसी तरह देश -विदेश के खेलकूद संबंधी/शासकीय-अशासकीय कार्यालयों में स्वर्गीय ध्यानचंद जी का फोटो लगा रहता है।

उपर्युक्त रेखांकित शब्दों को तालिका में लिखा गया है। इन्हें पढ़िए और समझिए-

सुबह	शाम
देश	विदेश
शुरू	खत्म
शासकीय	अशासकीय

उपर्युक्त तालिका में विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले युग्म शब्द हैं। ये शब्द एक दूसरे के विपरीत या उल्टे अर्थ का बोध कराते हैं। अतः इन्हें विपरीतार्थी या विलोम कहते हैं।

यह भी जानें-

विलोम शब्द एक दूसरे के विपरीत अर्थ देते हैं। यह विपरीतार्थ गुण, स्वभाव, आकार, स्थिति आदि के वाचक अर्थों का होता है। जैसे-दिन के विलोम में रात प्रकाश के गुण की विशेषता से संबंधित है। सज्जन के विलोम में दुर्जन स्वभाव की विशेषता से, पुण्य का विलोम पाप कर्म की विशेषता से संबंधित है।

संज्ञा शब्द का विलोम संज्ञा ही होता है और विशेषण का विलोम विशेषण ही होगा। जैसे सुख का दुःख सुखी का दुखी, सफल का असफल तथा सफलता का असफलता।

प्रश्न निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए-

संसार में प्रत्येक व्यक्ति के साथ संयोग-वियोग जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार दिन के साथ रात का संबंध है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, सम्मान-असम्मान, यश-अपयश का संबंध है। कभी परिस्थितियाँ अनुकूल होती है तो कभी प्रतिकूल हो जाती हैं।

प्रश्न उपर्युक्त गद्यांश में से विलोम शब्दों को छाँटकर लिखिए।

अब करने की बारी

1. हॉकी एवं अन्य खेलों के खिलाड़ियों के चित्रों का संग्रह कर उसका एक एलबम बनाएँ।
2. हॉकी के मैदान के अलग-अलग भागों के नाम पता कीजिए और लिखिए।
3. आपके गाँव में कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं, सूची बनाइएँ।

निर्देश - बच्चों को तीन से पाँच वाक्य का सरल श्रुतलेख लिखाएँ ।

.....

.....

.....

.....

.....

0